बी.ए. भाग (३) मैथिली

सप्रसंग व्याख्यान

डॉ दिवाकर यादव

पार्वती विज्ञान कॉ० मधेपुरा

प्रश्न:- साहित्यक अध्ययनमे आलोचनाक उपयोगिता पर विचार व्यक्त करू। आलोचनाक स्वरूप कें स्पष्ट करैत आलोचनाक उद्देश्य पर प्रकाश दिअ।

उत्तर:- आलोचना साहित्यक नव विधा थिक। ओकर विकास भेल साहित्य कें पुष्ट आ समृद्ध हेबाक आवश्यक अछि। किन्तु आचार्य आलोचनाक मूल अर्थ निर्णय स्वीकार कएने छथि। भारतीय वाङ्मय मे आलोचनाक मात्र निर्णयक प्रवृत्तिक बोध नहि करबैत अछि। ओकर अर्थक क्षेत्र बड़ व्यापक अछि। एकर मूल अर्थ देखब होइछ। आलोचनाक हेतु समीक्षा शब्द सेहो प्रयुक्त होइछ। ताहू सँ एहि अर्थक व्यंजना होइछ। साहित्यक क्षेत्र मे समीक्षा कोनो रचनाक सम्यक निरीक्षण थिक।

कलाकार अपना रचना करैत अछि, मुदा ओकर महत्वक विवेचन समालोचनाक माध्यम सँ होइत अछि। जाधरि आलोचक ताहि पर अपन टिप्पणी नहि करैत अछि। ताधरि अमूल्य निधि रहितहुँ कविक कला छिपल रहैत अछि। एवं संसारक हेतु ओकर उपादेयता नगण्य रहैत अछि। आलोचना कहि कलाक मर्म उद्घाटन करैत अछि। संसारक लोककेँ ओकर मूल्य समझाबाक हेतु विवश करैत अछि। एहि लेल यदि आलोचना नहि होयत तँ रत्न समुद्रतल मे छिपल अमूल्य मोती जकाँ कलाकारक कला छिपल रहि जाइत। कलाकार भावुक होइछ। ओ भावुकता मे अनियन्त्रित भए अपन रचना कें दोषपूर्ण बना

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

कना लैत अछि। आलोचनाक ओकर मार्ग प्रशस्त करैत अछि। पक्षपात शून्य आलोचना कएल कलाकार करैत ओकर गुण एवं अवगुणसँ अवगत करैत अछि। आलोचक कलाकारक पथ-प्रदर्शन करैत अछि एवं ओकरा आगाँ बढ़बाक अवसर दैत अछि। आलोचक उद्देश्य रचनात्मक होइछ आलोचना स्वयं एक प्रकारक निर्माण थिक आलोचना साहित्य ओ साहित्य थिक जे विस्तार गुण आ उपयोगिता मे कविता, नाटक कथा आदि सँ कम नहि आलोचना एक प्रकारक निर्बंध थिक कोनो साहित्यक ढाँचा हेतु अनेक आवश्यक मूल ग्रंथक निर्माण मे बड़ उपयोगी अछि।

आलोचनाक स्वरूप केँ तत्व सेहो कहल जा सकैछ प्रधानतः आलोचनाक आदि प्रमुख तत्व होइछ—

(1) विषय बोध अथवा अर्थग्रहण।
(2) व्याख्या विश्लेषण।
(3) मूल्य निर्धारण।
(4) साहित्यक गतिविधि पर नियंत्रण।

(1) विषय बोध अथवा अर्थग्रहण — आलोचक हेतु ई परमावश्यक अछि। जे हुनका आलोच्य विषय पूर्ण ज्ञान होयब एहि आधार मूल गुणक मे निष्पक्ष आलोचनाक असंभव थिक रचनाक अध्ययनक उपरांत ओकर प्रभाव ग्रहणक क्षमता सेहो आलोचकक हेतु अनिवार्य अछि। आ युक भिन्नता सेहो आलो[illegible] प्रतिक्रिया केँ भिन्न कए दैत अछि। युवावस्था

मे सेहो ओ ओहिना प्रतीत होमय अग्रालकमाल अवस्थित आलोचक, मध्यवित आलोचक आ सम्पन्न आलोचकक प्रतिक्रिया समान होमय आवश्यक नहि अछि। मार्क्सवादी समीक्षा पद्धतिक आलोचकमे एहि बातक पूर्ण प्रमाण प्राप्त होइत अछि।
(२) व्याख्या विश्लेषण- रचना सँ प्रभावित भेला पर ओकर गुण-दोषक विश्लेषण आलोचनाक ध्येय, परम थिक। एहि लेल आलोचक कें काव्यशास्त्र सौन्दर्यशास्त्र, मनोविज्ञान, समाजशास्त्रक अध्ययन अनिवार्य होइछ। आलोचना करबा काल चारि तथ्य पर ध्यान देब आवश्यक अछि। —
(१) काव्यक आकार
(२) ताहि निहित भाव
(३) कविक मन: स्थिति जाहि सँ काव्यक रचना भेल
(४) लेखकक समकालीन परिस्थिति जाहि इनक मन: स्थितिक निर्माण भेल। आलोचकक कर्तव्य थिक जे ओहि समस्त अंगकें ध्यान मे राखि उचित स्थान पर काज करथि। काव्य काव्यक शास्त्र के आधार पर रचनाक रूपक विवेचन, सौन्दर्यशास्त्रक आधार ओकर भावगत सौन्दर्यक उद्घाटन, मनोविज्ञानक द्वारा लेखकक मन: स्थिति विश्लेषण, समाजशास्त्र आधार पर युगीन परिस्थितिक वर्णन एवं कवि पर ओकर प्रभावक विश्लेषण आलोचकक चरमलक्ष्य
(३) मूल्य निर्धारण- रचनाक प्रति अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत आलोचक प्रकारान्तर सँ साहित्य मे ओकर